

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने बढ़ाई जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी के लॉरिएट अवॉर्ड की शोभा



जयपुर। जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी ने जयपुर स्थित यूनिवर्सिटी के कैम्पस में लाखों लोगों के प्रेरणा स्रोत, भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को जनसेवा, शासन प्रणाली और देश के निर्माण में बेहतरीन योगदान के लिए जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी द्वारा लॉरिएट अवॉर्ड 2018 से नवाजा गया।

श्री प्रणब मुखर्जी ने 5वें श्री हरी शंकर सिंघानिया मेमोरियल ओरेशन के तहत 'युव एंड नेशन बिल्डिंग' विषय पर अपने विचार रखे।

दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। जेकेएलयू के चांसलर डॉ. आर.एल. रैना ने स्वागत अभिभाषण दिया, उसके बाद चांसलर की अगुवाई में एक प्रस्तुति दी गई जिसमें जानी-मानी हस्तियों की मौजूदगी में इस लॉरिएट अवॉर्ड एवम श्री हरी शंकर सिंघानिया मेमोरियल ओरेशन का परिचय दिया गया।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जेकेएलयू लॉरिएट अवॉर्ड की प्रशंसा की, जो कि युवाओं और शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन दे रहा है, उन्होंने कहा कि, भारत दुनिया का सबसे युवा देश है जहाँ 65वें आबादी 35 साल की आयु से कम की है। इस जनसंख्या को लाभकर बनायें, ताकि वह जनसंख्या डिजास्टर न साबित हो, यह बेहद जरूरी है कि युवाओं की उपयुक्त शिक्षा और प्रशिक्षण हासिल हो।

उन्होंने ऐसी शिक्षा की जरूरत पर बल दिया जो रोजगार परक कौशल विकसित करने वाली हो, इस मामले में महात्मागान्धी, स्वामी विवेकानंद, पंडित

जवाहरलाल नेहरू और रबिंद्रनाथ टैगोर के विचारों पर प्रकाश डालते हुए श्री मुखर्जी ने बताया कि किस तरह से उन्होंने भारत को एक ऐसे समूह के रूप में देखा जो 120 अलग-अलग भाषाएँ और 1600 बोलियाँ बोलते हैं, प्रमुख धर्मों को मानने वाले हैं और इतिहास में झाँककर देखें तो किस प्रकार से अलग-अलग जगहों से आकर यहाँ एक-दूसरे के साथ जुड़ गए हैं।

भारत जैसे देश की परिभाषा संकीर्ण नहीं हो सकती है, इसे राष्ट्र के यूरोपियन क्लसिफिकेशन में नहीं खूँझा जा सकता, जिसका उदय 1648 में ट्रीटी ऑफ वेस्टफालिया से हुआ।

बल्कि इसे एक वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के जरिए पेश किया जा सकता है, जिसका मतलब है, पूरा विश्व मेरा राष्ट्र है।

यह मात्र एक शब्द नहीं बल्कि वह विचार है जिसे अपनाकर हमारी युवा पीढ़ी की आध्यात्मिक और बौद्धिक दोनों रूपों में विकसित होते देखना चाहिए। श्री मुखर्जी ने अपने अभिभाषण का समापन उन युवा दर्शकों की प्रशंसा के साथ किया जो अपनी दुनिया स्वयं रचते हैं कुछ इस तरह से कि पूरी दुनिया उन्हें हाथों हाथ लेने को तैयार होती है।

जेकेएलयू के चांसलर भारत हरी सिंघानिया ने इस मौके पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि, भारत का युवा आविस्कारों को अपनाकर और रोजगार के रूप में उद्यमिता को चुन कर देश की अर्थव्यवस्था में काफी बड़े स्तर पर योगदान दे रहा है।